अध्याय 7: मत बाँधो

विषय-सूची 9 प्रश्नावली · 18 प्रश्न

प्रश्नावली 7.1	मेरी समझ से	5 प्रश्न
प्रश्नावली 7.2	पंक्तियों पर चर्चा	2 प्रश्न
प्रश्नावली 7.3	मिलकर करें मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 7.4	सोच-विचार के लिए	3 प्रश्न
प्रश्नावली 7.5	कविता की रचना — विशेषताएँ मिलान	1 प्रश्न
प्रश्नावली 7.6	शब्दों की बात	3 प्रश्न
प्रश्नावली 7.7	काल परिवर्तन	1 प्रश्न
प्रश्नावली 7.8	शब्दकोश से — शिल्प के यौगिक शब्द	1 प्रश्न
प्रश्नावली 7.9	शिल्प — शिल्प-कार्य और अर्थ मिलान	1 प्रश्न

प्रश्नावली 7.1 — मेरी समझ से

प्रश्न 1

आप इनमें से कविता का मुख्य भाव किससे समझते हैं? • सपने मात्र कल्पनाएँ हैं • सपनों को भूल जाना चाहिए • सपनों की स्वतंत्रता बनी रहनी चाहिए • सपने देखना अच्छी बात है

हल

कविता में कवयित्री महादेवी वर्मा बार-बार कहती हैं — 'इन सपनों के पंख न काटो / इन सपनों की गति मत बाँधो!'

कविता का केंद्रीय भाव यह है कि सपनों को स्वतंत्र रूप से उड़ने दिया जाए — उन पर कोई बंधन न लगाया जाए। सपनों में आरोहण (ऊपर उठना) और अवरोहण (नीचे आना) दोनों स्वाभाविक हैं और यही उनकी विशेषता है।

अतः सही उत्तर है: सपनों की स्वतंत्रता बनी रहनी चाहिए।

उत्तर: सपनों की स्वतंत्रता बनी रहनी चाहिए

प्रश्न 2

'मत बाँधो' कविता किसकी स्वतंत्रता की बात करती है? • प्रेम की • शिक्षा की • सपनों की • अधिकारों की

हल

कविता का शीर्षक 'मत बाँधो' है और इसकी मुख्य पंक्तियाँ हैं — 'इन सपनों के पंख न काटो / इन सपनों की गति मत बाँधो!'

कवयित्री सपनों को बाधित न करने की बात करती हैं — सपनों को उड़ने देना, उनके आरोहण-अवरोहण को मुक्त रखना ही कविता का विषय है।

अतः सही उत्तर है: सपनों की।

उत्तर: सपनों की

प्रश्न 3

"इन सपनों के पंख न काटो" पंक्ति में सपनों के 'पंख' होने की कल्पना क्यों की गई है? • सपने जीवन में कुछ नया करने की प्रेरणा देते हैं • सपने सफलता की ऊँचाइयों तक ले जाते हैं • सपने पंखों की तरह उड़ान भर भ्रमण करवाते हैं • सपने पंखों की तरह कोमल और अनेक प्रकार के होते हैं

हल

कविता में सपनों को उड़ान भरने में सक्षम बताया गया है — वे सौरभ की तरह नभ में उड़ते हैं।
पंख उड़ान के प्रतीक हैं। यहाँ सपनों के 'पंख' होने की कल्पना इसलिए की गई है क्योंकि सपने पंखों की तरह उड़ान भर कर भ्रमण करवाते हैं — वे व्यक्ति को ऊँचाइयों तक ले जाते हैं।
यदि पंख काट दिए जाएँ तो उड़ान संभव नहीं — इसीलिए कवयित्री सपनों के पंख न काटने की बात करती हैं।
अतः सही उत्तर है: सपने पंखों की तरह उड़ान भर भ्रमण करवाते हैं।

उत्तर: सपने पंखों की तरह उड़ान भर भ्रमण करवाते हैं

प्रश्न 4

"स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प" पंक्ति में 'स्वर्ग' से आप क्या समझते हैं? • जहाँ किसी प्रकार का शारीरिक कष्ट न हो • जहाँ अतुलनीय धन संपत्ति हो • जहाँ परस्पर सहयोग एवं सद्भाव हो • जहाँ सभी प्राणी एक-दूसरे के प्रति संवेदनशील हों

हल

कविता में स्वर्ग की कल्पना एक ऐसे संसार के रूप में है जहाँ सुख, शांति, समृद्धि और आनंद हो।
कवयित्री कहती हैं कि सपने और शिल्प (कला-कौशल) मिलकर भूमि को स्वर्ग बना सकते हैं।
यहाँ 'स्वर्ग' का तात्पर्य एक ऐसे स्थान से है जहाँ परस्पर सहयोग एवं सद्भाव हो — जहाँ सभी के साथ मिलकर जीने की भावना हो।
अतः सही उत्तर है: जहाँ परस्पर सहयोग एवं सद्भाव हो।

उत्तर: जहाँ परस्पर सहयोग एवं सद्भाव हो

प्रश्न 5

यदि बीज धूल में गिर जाए तो क्या हो सकता है? • वह बहुत तेज़ी से उड़ सकता है • वह और गहरा हो सकता है • उसकी उड़ान रुक सकती है • वह बढ़कर पौधा बन सकता है

हल

कविता में कहा गया है — 'बीज धूलि में गिर जाता जो / वह नभ में कब उड़ पाता है?' अर्थात् जो बीज धूल में गिर जाए वह आकाश में उड़ नहीं सकता।
धूल में गिरे बीज की उड़ान रुक जाती है — वह नभ तक नहीं पहुँच पाता।
परंतु यह भी सच है कि धूल में गिरा बीज उचित परिस्थितियों (धूप, पानी, मेहनत) में बढ़कर पौधा बन सकता है।

पुस्तक में इस प्रश्न के संदर्भ में 'वह नभ में कब उड़ पाता है?' से यह स्पष्ट है कि बीज के धूल में गिरने से उसकी उड़ान (संभावना) रुक सकती है।
अतः सही उत्तर है: उसकी उड़ान रुक सकती है।

उत्तर: उसकी उड़ान रुक सकती है

प्रश्नावली 7.2 — पंक्तियों पर चर्चा

प्रश्न 1

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ अपने शब्दों में लिखिए— (क) "सौरभ उड़ जाता है नभ में फिर वह लौट कहाँ आता है? बीज धूलि में गिर जाता जो वह नभ में कब उड़ पाता है?"

हल

इन पंक्तियों में कवयित्री सपनों को सौरभ (सुगंध) और बीज के माध्यम से समझाती हैं।
जब सौरभ (सुगंध) वायु में उड़ जाती है तो वह पुनः उसी रूप में वापस नहीं आती — वह अंतरिक्ष में विलीन हो जाती है।
इसी प्रकार सपने यदि एक बार स्वतंत्र रूप से उड़ जाएँ तो वे फिर बंध कर वापस नहीं आते।
दूसरी ओर, यदि बीज धूल में गिर जाए तो वह आकाश में उड़ नहीं सकता — वह अपनी संभावनाओं तक नहीं पहुँच पाता।
तात्पर्य यह है कि सपनों को यदि बाधित किया जाए (धूल में गिराया जाए) तो वे अपनी ऊँचाई (नभ) तक नहीं पहुँच पाते। सपनों को स्वतंत्र रहने देना चाहिए।

उत्तर: सुगंध (सौरभ) उड़कर नभ में विलीन हो जाती है — वापस नहीं आती। इसी तरह धूल में गिरा बीज आकाश में नहीं उड़ सकता। अर्थात् सपनों को बाधित करने पर वे अपनी ऊँचाई नहीं पा सकते।

प्रश्न 2

नीचे दी गई पंक्तियों का अर्थ अपने शब्दों में लिखिए— (ख) "मुक्त गगन में विचरण कर यह तारों में फिर मिल जायेगा, मेघों से रंग औ' किरणों से दीप्ति लिए भू पर आयेगा। स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प भूमि को सिखलायेगा!"

हल

इन पंक्तियों में कवयित्री सपने की यात्रा का वर्णन करती हैं।
'मुक्त गगन में विचरण' — जब सपना स्वतंत्र रूप से आकाश में विचरण करेगा, तो वह तारों में मिल जाएगा अर्थात् अनंत संभावनाओं से जुड़ेगा।
वह सपना मेघों (बादलों) से रंग और किरणों से प्रकाश-चमक लेकर पुनः धरती पर वापस आएगा — अर्थात् कल्पना अनुभव और ज्ञान से समृद्ध होकर वास्तविकता में प्रकट होगी।
'स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प' — वह सपना पृथ्वी को सुंदर, समृद्ध और शांतिपूर्ण बनाने का कोई नया कौशल (शिल्प) भूमि को सिखाएगा।
तात्पर्य यह है कि स्वतंत्र सपने ऊँचाइयों तक जाकर लौटते हैं और धरती को स्वर्ग बनाने की प्रेरणा और कौशल लाते हैं।

उत्तर: स्वतंत्र सपना मुक्त आकाश में विचरण करके तारों से मिलेगा, मेघों से रंग और किरणों से प्रकाश लेकर पृथ्वी पर लौटेगा और पृथ्वी को स्वर्ग बनाने का शिल्प (कौशल) सिखाएगा।

प्रश्नावली 7.3 — मिलकर करें मिलान

प्रश्न 1

कविता में से चुनकर कुछ पंक्तियाँ स्तंभ 1 में दी गई हैं। उन पंक्तियों के भाव या संदर्भ स्तंभ 2 में दिए गए हैं। पंक्तियों को उनके सही भाव अथवा संदर्भ से मिलाइए। स्तंभ 1: 1. इन सपनों के पंख न काटो / इन सपनों की गति मत बाँधो! 2. सपनों में दोनों ही गति हैं / उड़कर आँखों में आता है! 3. इसका आरोहण मत रोको / इसका अवरोहण मत बाँधो! 4. नभ तक जाने से मत रोको / धरती से इसको मत बाँधो! 5. स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प / भूमि को सिखलायेगा! स्तंभ 2: 1. सपनों के उठने (आरोहण) और उनके व्यवहार में वापस आने (अवरोहण) में बाधा न डालें, क्योंकि स्वतंत्रता ही सपनों को साकार करने की कुंजी है। 2. सपनों को ऊँचाइयों तक जाने से मत रोको। उन्हें धरती से बाँधकर मत रखो। 3. किसी पक्षी के पंख काट दिए जाएँ तो वह उड़ नहीं सकता, वैसे ही अगर हम किसी के सपनों को बाधित करें तो उसकी कल्पनाशीलता और संभावनाएँ समाप्त हो जाएँगी। 4. रचनात्मक और स्वतंत्र विचार समाज को सुंदर, समृद्ध और शांतिपूर्ण बना सकता है। 5. सपनों में ऊपर उठने (आरोहण) और नीचे आने (अवरोहण) दोनों की विशेषता होती है। सपना विचार की तरह जन्म लेता है और फिर व्यवहार में पूरा होता है, तभी वह कल्पना से निकलकर सच्चाई बनता है।

हल

1 → 3: 'इन सपनों के पंख न काटो / इन सपनों की गति मत बाँधो!' — किसी पक्षी के पंख काट दिए जाएँ तो वह उड़ नहीं सकता, वैसे ही अगर हम किसी के सपनों को बाधित करें तो उसकी कल्पनाशीलता और संभावनाएँ समाप्त हो जाएँगी।

2 → 5: 'सपनों में दोनों ही गति हैं / उड़कर आँखों में आता है!' — सपनों में ऊपर उठने (आरोहण) और नीचे आने (अवरोहण) दोनों की विशेषता होती है। सपना विचार की तरह जन्म लेता है और फिर व्यवहार में पूरा होता है, तभी वह कल्पना से निकलकर सच्चाई बनता है।

3 → 1: 'इसका आरोहण मत रोको / इसका अवरोहण मत बाँधो!' — सपनों के उठने (आरोहण) और उनके व्यवहार में वापस आने (अवरोहण) में बाधा न डालें, क्योंकि स्वतंत्रता ही सपनों को साकार करने की कुंजी है।

4 → 2: 'नभ तक जाने से मत रोको / धरती से इसको मत बाँधो!' — सपनों को ऊँचाइयों तक जाने से मत रोको। उन्हें धरती से बाँधकर मत रखो।

5 → 4: 'स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प / भूमि को सिखलायेगा!' — रचनात्मक और स्वतंत्र विचार समाज को सुंदर, समृद्ध और शांतिपूर्ण बना सकता है।

उत्तर: 1→3, 2→5, 3→1, 4→2, 5→4

प्रश्नावली 7.4 — सोच-विचार के लिए

प्रश्न 1

कविता को पुनः पढ़िए, पता लगाइए और लिखिए— (क) कविता में 'मत बाँधो', 'पंख न काटो' आदि संबोधन किसके लिए किए गए होंगे?

हल

कविता में 'मत बाँधो' और 'पंख न काटो' संबोधन उन सभी लोगों के लिए किया गया है जो किसी के सपनों, कल्पनाओं और विचारों पर नियंत्रण रखना चाहते हैं।
यह संबोधन उन माता-पिता, समाज, व्यवस्था या व्यक्तियों के लिए है जो बच्चों या युवाओं के सपनों को सीमित करते हैं — उन्हें उनकी कल्पनाशीलता से रोकते हैं।
इसे एक सामान्य अपील के रूप में भी समझा जा सकता है — कोई भी व्यक्ति, संस्था या शक्ति जो सपनों और विचारों की स्वतंत्रता को बाधित करती है, उसे ही यह संबोधन किया गया है।

उत्तर: यह संबोधन उन सभी लोगों (माता-पिता, समाज, व्यवस्था) के लिए है जो किसी के सपनों, कल्पनाओं और विचारों की स्वतंत्रता को सीमित या बाधित करते हैं।

प्रश्न 2

(ख) कविता में सपनों की गति न बाँधने की बात क्यों कही गई होगी?

हल

सपने मनुष्य की कल्पनाशीलता और प्रगति के आधार होते हैं — वे उसे ऊँचाइयों तक पहुँचाते हैं।
कविता में सौरभ, बीज, अग्नि और धुआँ जैसे उदाहरणों के माध्यम से बताया गया है कि जब ये प्राकृतिक तत्व स्वतंत्र रूप से चलते हैं तभी वे अपना वास्तविक काम कर पाते हैं।
इसी प्रकार सपनों की गति बाँधने से उनकी संभावनाएँ समाप्त हो जाती हैं और मनुष्य अपनी कल्पना की ऊँचाइयों तक नहीं पहुँच पाता।
स्वतंत्र सपने ही स्वर्ग (सुंदर, शांतिपूर्ण संसार) बनाने का शिल्प लाते हैं — इसलिए उनकी गति बाँधना उचित नहीं है।

उत्तर: सपनों की गति बाँधने से उनकी संभावनाएँ समाप्त हो जाती हैं। स्वतंत्र सपने ही ऊँचाइयों तक पहुँचकर पृथ्वी को स्वर्ग बनाने का शिल्प (कौशल) लाते हैं, इसलिए उनकी गति बाँधना उचित नहीं है।

प्रश्न 3

(घ) कविता में 'आरोहण' और 'अवरोहण' दोनों के महत्व की बात की गई है। उदाहरण देकर बताइए कि आपने 'आरोहण' और 'अवरोहण' को कब-कब सार्थक होते देखा?

हल

'आरोहण' का अर्थ है — ऊपर उठना या चढ़ना; 'अवरोहण' का अर्थ है — ऊपर से नीचे आना।
कविता में सपनों के लिए दोनों गतियाँ ज़रूरी बताई गई हैं — सपना पहले विचार के रूप में उठता है (आरोहण)

और फिर व्यवहार में साकार होकर जीवन में उतरता है (अवरोहण)।

उदाहरण 1 — आरोहण: स्वतंत्रता सेनानियों का सपना था कि भारत स्वतंत्र हो — यह सपना पहले मन में उठा (आरोहण)।

उदाहरण 2 — अवरोहण: उसी सपने को पूरा करने के लिए उन्होंने कार्य किया और 1947 में आज़ादी मिली — सपना वास्तविकता बनकर जीवन में उतरा (अवरोहण)।

संगीत में सुर का ऊपर चढ़ना आरोहण है और नीचे आना अवरोहण — दोनों मिलकर राग को पूर्ण करते हैं।

उत्तर: आरोहण = सपने या विचार का उठना/ऊपर जाना; अवरोहण = वास्तविकता में उतरना। जैसे: स्वतंत्रता का सपना उठा (आरोहण) → 1947 में साकार हुआ (अवरोहण)। संगीत में स्वर का चढ़ना-उतरना भी इसी का उदाहरण है।

प्रश्नावली 7.5 — कविता की रचना — विशेषताएँ मिलान

प्रश्न 1

नीचे इस कविता की कुछ विशेषताएँ और वे पंक्तियाँ दी गई हैं जिनमें ये विशेषताएँ समाहित हैं। विशेषताओं का सही पंक्तियों से मिलान कीजिए। कविता की विशेषताएँ: 1. एक-दूसरे के विपरीत अर्थ वाले शब्दों का प्रयोग किया गया है। 2. एक ही शब्द का प्रयोग बार-बार किया गया है। 3. समानार्थी शब्दों का प्रयोग किया गया है। 4. प्रश्न पूछा गया है। 5. संबोधन का प्रयोग किया गया है। 6. सपने को मनुष्य की तरह चित्रित किया गया है। कविता की पंक्तियाँ: 1. वह नभ में कब उड़ पाता है? 2. इसका आरोहण मत रोको / इसका अवरोहण मत बाँधो! 3. स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प / भूमि को सिखलायेगा! 4. इन सपनों के पंख न काटो 5. नभ तक जाने से मत रोको / धरती से इसको मत बाँधो! 6. दीप्ति लिए भू पर आयेगा। / स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प / भूमि को सिखलायेगा!

हल

1 (विपरीत अर्थ वाले शब्द) → 2: 'इसका आरोहण मत रोको / इसका अवरोहण मत बाँधो!' — 'आरोहण' (ऊपर जाना) और 'अवरोहण' (नीचे आना) विपरीतार्थी शब्द हैं।

2 (एक ही शब्द बार-बार) → 4: 'इन सपनों के पंख न काटो' — 'सपनों' शब्द और 'मत' का प्रयोग बार-बार किया गया है (पूरी कविता में 'मत बाँधो', 'मत रोको' आदि)।

3 (समानार्थी शब्द) → 6: 'दीप्ति लिए भू पर आयेगा। / स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प / भूमि को सिखलायेगा!' — 'भू' और 'भूमि' (धरती के समानार्थी) का प्रयोग हुआ है।

4 (प्रश्न) → 1: 'वह नभ में कब उड़ पाता है?' — यहाँ प्रश्न पूछा गया है।

5 (संबोधन) → 5: 'नभ तक जाने से मत रोको / धरती से इसको मत बाँधो!' — 'मत रोको', 'मत बाँधो' संबोधन के प्रयोग हैं।

6 (सपने को मनुष्य की तरह) → 3: 'स्वर्ग बनाने का फिर कोई शिल्प / भूमि को सिखलायेगा!' — सपना मानो स्वयं शिल्प रचता और भूमि को सिखाता है (मानवीकरण)।

उत्तर: 1→2, 2→4, 3→6, 4→1, 5→5, 6→3

प्रश्नावली 7.6 — शब्दों की बात

प्रश्न 1

(क) नीचे दिए रिक्त स्थान में 'आरोहण' और 'अवरोहण' का उपयुक्त प्रयोग करके वाक्यों को पूरा कीजिए। • पर्वतारोहियों ने बीस दिन तक पर्वत पर _____ कर विजय प्राप्त की। • नदियाँ विशाल पर्वतों से _____ करते हुए सागर में मिल जाती हैं। • अंकगणित में बड़ी संख्या से छोटी संख्या की ओर लिखने की प्रक्रिया _____ क्रम कहलाती है।

हल

वाक्य 1: पर्वतारोहियों ने बीस दिन तक पर्वत पर 'आरोहण' कर विजय प्राप्त की।
कारण: आरोहण का अर्थ है नीचे से ऊपर की ओर जाना/चढ़ना। पर्वत पर चढ़ना = आरोहण।
वाक्य 2: नदियाँ विशाल पर्वतों से 'अवरोहण' करते हुए सागर में मिल जाती हैं।
कारण: अवरोहण का अर्थ है ऊपर से नीचे की ओर आना। नदियाँ पर्वत से नीचे की ओर आती हैं = अवरोहण।
वाक्य 3: अंकगणित में बड़ी संख्या से छोटी संख्या की ओर लिखने की प्रक्रिया 'अवरोहण' क्रम कहलाती है।
कारण: बड़े से छोटे की ओर = ऊपर से नीचे = अवरोहण।

उत्तर: 1. आरोहण; 2. अवरोहण; 3. अवरोहण

प्रश्न 2

(ग) कविता में 'मत' शब्द के साथ 'बाँधो', 'काटो' क्रिया लगाई गई है। कविता में 'मत बाँधो' का उपयोग किया गया है। रोको के लिए कौन-सी क्रिया लगाई है?

हल

कविता में 'मत' के साथ निम्नलिखित क्रियाएँ लगाई गई हैं: बाँधो, काटो, रोको।
कविता की पंक्ति है — 'इसका आरोहण मत रोको' — अर्थात् 'रोको' क्रिया लगाई गई है।
तथा — 'नभ तक जाने से मत रोको' — यहाँ भी 'रोको' क्रिया का प्रयोग किया गया है।
इसके अलावा 'मत बाँधो' और 'पंख न काटो' भी प्रयुक्त हैं।
अतः 'रोकने' के लिए कविता में 'रोको' क्रिया लगाई गई है।

उत्तर: कविता में 'मत' के साथ 'रोको' क्रिया लगाई गई है — 'इसका आरोहण मत रोको' और 'नभ तक जाने से मत रोको'।

प्रश्न 3

(ङ) 'मत' शब्द को उलट कर लिखने से शब्द बनता है 'तम' जिसका अर्थ है 'अंधेरा'। कविता में से कुछ ऐसे और शब्द छाँटिए जिन्हें उलट कर लिखने से अर्थ देने वाले शब्द बनते हैं।

हल

कविता में 'मत' → 'तम' (अंधेरा) की तरह कुछ और शब्द ढूँढें जो पलटने पर अर्थपूर्ण बनते हैं:
1. 'नभ' → 'भन' (यह शब्द नहीं बनता)। पर 'नभ' = आकाश।

2. 'पर' → 'रप' (अर्थपूर्ण नहीं)।
3. 'तन' → 'नत' (नत = झुका हुआ — अर्थ देता है)।
4. 'रग' → 'गर' (गर = यदि — अर्थ देता है)।
5. 'वह' → 'हव' (हव = यज्ञ में अर्पण — अर्थपूर्ण)।
6. 'उड़' का उल्टा सीधे नहीं बनता।

संभावित उत्तर: 'नभ' (कविता में प्रयुक्त), 'तन', 'रग' जैसे शब्द जिन्हें उलटने पर 'नत', 'गर' जैसे अर्थपूर्ण शब्द बनते हैं।

उत्तर: कविता से उदाहरण: 'मत' → 'तम' (अंधेरा); 'नभ' → (पलटने पर 'भन' नहीं बनता लेकिन यह प्रयत्न किया जा सकता है); 'तन' → 'नत'; 'रग' → 'गर'।

प्रश्नावली 7.7 — काल परिवर्तन

प्रश्न 1

कविता में वर्तमान काल में लिखी गई ऐसी अनेक पंक्तियाँ आई हैं। उन पंक्तियों को कविता में से ढूँढकर भूतकाल और भविष्य काल में लिखिए। (उदाहरण: वर्तमान काल — 'सौरभ उड़ जाता है नभ में' → भूतकाल — 'सौरभ उड़ गया है नभ में' → भविष्य काल — 'सौरभ उड़ जाएगा नभ में')

हल

पंक्ति 1: वर्तमान काल — 'बीज धूलि में गिर जाता जो'
भूतकाल — 'बीज धूलि में गिर गया जो'
भविष्य काल — 'बीज धूलि में गिर जाएगा जो'
पंक्ति 2: वर्तमान काल — 'अग्नि सदा धरती पर जलती'
भूतकाल — 'अग्नि सदा धरती पर जली'
भविष्य काल — 'अग्नि सदा धरती पर जलेगी'
पंक्ति 3: वर्तमान काल — 'धूम गगन में मँडराता है'
भूतकाल — 'धूम गगन में मँडराया था'
भविष्य काल — 'धूम गगन में मँडराएगा'

उत्तर: उदाहरण: वर्तमान — 'अग्नि सदा धरती पर जलती' → भूतकाल — 'अग्नि सदा धरती पर जली' → भविष्य काल — 'अग्नि सदा धरती पर जलेगी'।

प्रश्नावली 7.8 — शब्दकोश से — शिल्प के यौगिक शब्द

प्रश्न 1

शब्दकोश से 'शिल्प' शब्द से जुड़े निम्नलिखित शब्दों के अर्थ खोजकर लिखिए— 1. शिल्पकार, शिल्पी, शिल्पजीवी, शिल्पकारक, शिशिल्पक या शिल्पकारी 2. शिल्पकला 3. शिल्पकौशल 4. शिल्पगृह या शिल्पगेह 5. शिल्पविद्या 6. शिल्पशाला या शिल्पालय

हल

1. शिल्पकार / शिल्पी / शिल्पजीवी — वह व्यक्ति जो हस्तशिल्प या दस्तकारी का काम करता हो; कारीगर, हुनरमंद व्यक्ति। उदाहरण — कुम्हार, बुनकर, बढ़ई आदि।
2. शिल्पकला — हाथ से वस्तुएँ बनाने की कला; दस्तकारी की कला। जैसे — मिट्टी के बर्तन बनाना, कपड़े बुनना, गहने गढ़ना।
3. शिल्पकौशल — हस्तशिल्प में दक्षता या निपुणता; हाथ से काम करने का हुनर।
4. शिल्पगृह / शिल्पगेह — वह स्थान या घर जहाँ शिल्प-कार्य किया जाता हो; कारखाना, कार्यशाला।
5. शिल्पविद्या — शिल्प (दस्तकारी, कारीगरी) की विद्या या ज्ञान; हस्तकला-विज्ञान।
6. शिल्पशाला / शिल्पालय — वह स्थान जहाँ शिल्पकारी सिखाई जाती हो; कारीगरी की पाठशाला या संस्था।

उत्तर: 1. शिल्पकार = कारीगर; 2. शिल्पकला = दस्तकारी की कला; 3. शिल्पकौशल = हस्तकला में निपुणता; 4. शिल्पगृह = कार्यशाला; 5. शिल्पविद्या = हस्तकला का ज्ञान; 6. शिल्पशाला = कारीगरी की पाठशाला।

प्रश्नावली 7.9 — शिल्प — शिल्प-कार्य और अर्थ मिलान

प्रश्न 1

अपने समूह के साथ मिलकर नीचे दिए गए शिल्प-कार्यों को उनके सही अर्थों या व्याख्या से मिलाइए— शिल्प-कार्य: 1. काष्ठ शिल्प 2. मृत्तिका शिल्प 3. धातु शिल्प 4. काँच शिल्प 5. वस्त्र शिल्प 6. कागज़ शिल्प 7. पत्थर शिल्प 8. चमड़ा शिल्प 9. बाँस और बेंत शिल्प 10. मोती एवं आभूषण शिल्प 11. लाख शिल्प 12. शीशा शिल्प 13. चित्रकला शिल्प 14. नक्काशी शिल्प अर्थ या व्याख्या: 1. काँच से झूमर, सजावटी वस्तुएँ और रंगीन खिड़कियाँ आदि बनाना 2. कपड़ों पर कढ़ाई, बुनाई, छपाई, बंधेज आदि सजावटी कार्य 3. कागज़ से खिलौने, सजावट, लिफाफे और पेपर मेशी बनाना 4. लकड़ी से वस्तुएँ, खिलौने, मूर्तियाँ आदि बनाना 5. मिट्टी से बर्तन, दीये, मूर्तियाँ और सजावटी चीज़ें बनाना 6. ताँबा, पीतल, लोहे जैसी धातुओं से दीपक, मूर्तियाँ, थालियाँ आदि बनाना 7. पारंपरिक चित्रकलाओं, जैसे मधुबनी, गोंड, वरली आदि से कलाकृतियाँ बनाना 8. कपड़ों या सजावट की वस्तुओं में शीशे जोड़ना या जड़ाई करना 9. लाख से चूड़ियाँ, खिलौने, डिब्बे और अन्य सजावटी वस्तुएँ बनाना 10. लकड़ी, पत्थर या धातु पर बारीक खुदाई द्वारा डिज़ाइन बनाना 11. बाँस और बेंत से टोकरियाँ, कुर्सियाँ, चटाई, पंखे आदि बनाना 12. चमड़े से जूते, बेल्ट, बैग और अन्य उपयोगी वस्तुएँ बनाना 13. संगमरमर या अन्य पत्थरों से मूर्तियाँ बनाना, मंदिरों की सजावट करना आदि 14. रंग-बिरंगे मोतियों से हार, कंगन, झुमके आदि गहने बनाना

हल

1. काष्ठ शिल्प → 4: लकड़ी से वस्तुएँ, खिलौने, मूर्तियाँ आदि बनाना
2. मृत्तिका शिल्प → 5: मिट्टी से बर्तन, दीये, मूर्तियाँ और सजावटी चीज़ें बनाना
3. धातु शिल्प → 6: ताँबा, पीतल, लोहे जैसी धातुओं से दीपक, मूर्तियाँ, थालियाँ आदि बनाना
4. काँच शिल्प → 1: काँच से झूमर, सजावटी वस्तुएँ और रंगीन खिड़कियाँ आदि बनाना
5. वस्त्र शिल्प → 2: कपड़ों पर कढ़ाई, बुनाई, छपाई, बंधेज आदि सजावटी कार्य
6. कागज़ शिल्प → 3: कागज़ से खिलौने, सजावट, लिफाफे और पेपर मेशी बनाना
7. पत्थर शिल्प → 13: संगमरमर या अन्य पत्थरों से मूर्तियाँ बनाना, मंदिरों की सजावट करना आदि
8. चमड़ा शिल्प → 12: चमड़े से जूते, बेल्ट, बैग और अन्य उपयोगी वस्तुएँ बनाना
9. बाँस और बेंत शिल्प → 11: बाँस और बेंत से टोकरियाँ, कुर्सियाँ, चटाई, पंखे आदि बनाना
10. मोती एवं आभूषण शिल्प → 14: रंग-बिरंगे मोतियों से हार, कंगन, झुमके आदि गहने बनाना
11. लाख शिल्प → 9: लाख से चूड़ियाँ, खिलौने, डिब्बे और अन्य सजावटी वस्तुएँ बनाना
12. शीशा शिल्प → 8: कपड़ों या सजावट की वस्तुओं में शीशे जोड़ना या जड़ाई करना
13. चित्रकला शिल्प → 7: पारंपरिक चित्रकलाओं, जैसे मधुबनी, गोंड, वरली आदि से कलाकृतियाँ बनाना
14. नक्काशी शिल्प → 10: लकड़ी, पत्थर या धातु पर बारीक खुदाई द्वारा डिज़ाइन बनाना

उत्तर: 1→4, 2→5, 3→6, 4→1, 5→2, 6→3, 7→13, 8→12, 9→11, 10→14, 11→9, 12→8, 13→7, 14→10